आज का पुरुषार्थ, 14 April 2022

From: BK Suraj bhai   **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"हमें परम पवित्र बनना है, सम्पूर्ण प्योरीटी लाना है जीवन में "*

बाबा हमें सम्पूर्ण पवित्र बनाने आये है। जब हम **सम्पूर्ण पवित्र** बन जायेंगे, जब अपवित्रता तनिक भी नहीं रहेगी तब हम घर वापिस जायेंगे।

अपवित्रता समाप्त होना माना **कर्मेन्द्रियाँ शीतल होना**। सम्पूर्ण पवित्र स्थिति अर्थात **आत्मिक भाव** हो जाना। वृत्ति में यह समा जायें कि सब आत्मायें है।

मन बुद्धि से, नयनों से क्रिमिनल्टी समाप्त हो जाये। और हम अपने श्रे**ष्ठ स्वमान** में स्थित होकर महान संकल्पों में रमण करते रहे।

ऐसे पवित्रता के वायब्रेशन्स सारे संसार में फैलते है। यह वायब्रेशन्स प्रकृति के लिए वरदान होते है।

तो आईये हम ईश्वरीय कार्य में सहयोग करने के लिए अपने अंदर **सम्पूर्ण पवित्रता** की धारणा करे।

विकारों के मार्ग पर हजारों साल तो चलकर हमने देख लिया। वो क्षणिक सुख आत्मा को पतन की राह पर ले आया। वो क्षणिक सुख सदा के लिए दुःखों के द्वार खुल गया।

इससे देहभान बढ़ता गया। दैहिक दृष्टि बढ़ती गई। संसार में पाप बढ़ता गया। समस्यायें विकराल रूप लेती गई।

अब हम **पवित्र** बनकर इस दुःखमय संसार को पुनः सुखमय बनायेंगे। स्वयं भगवान की आज्ञा है " सम्पूर्ण पवित्र बनो "।

जहाँ हजारों साल हम अपवित्र रहे, वहाँ **एक जन्म हम पवित्रता** के सुख लेना है। और जन्म जन्म किये अपवित्रता को नष्ट कर देना है।

अपने से दृढ़ संकल्प करे ...

" जिन राहों पर सारा संसार चल रहा है उन राहों पर हमें नहीं चलना है .. हमें अपनी राहे बदल देनी है .. पवित्रता का मार्ग हमनें अपना लिया है ..

अब उसे सम्पन्न करना है .. एकबार जिस राह पर हम चल पड़े .. पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे .. तब तक नहीं बैठेंगे .. जब तक मंजिल न मिल जाये "

तो हम सभी अपने पवित्रता को अपने नेचुरल शक्ति बनाने के लिए योग अभ्यास बहुत बढ़ाये। विना **योगवल** के किसी में भी सम्पूर्ण पवित्रता आ नहीं सकती।

केवल दृढ़ता रखने से हमारी **कर्मेन्द्रियाँ शीतल** तो नहीं होंगी ना? इसलिए दृढ़ता के साथ, प्रतिज्ञा के साथ हम देही अभिमानी बनने की साधना करे। आत्मिक दृष्टि रखने की साधना करे। देह को भूलते जाये। देखते हुए भी न देखने की साधना करे।

पवित्रता तो हमारा नेचुरल संस्कार है। यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। दो युग तो हम पवित्र ही रहे थे। इसलिए पवित्र रहना हमारे लिए कठिन नहीं होगा। **देही अभिमानी** आत्मा ही बहुत ज्यादा सेवा कर पायेंगी।

सेवाओं में सफलता का आधार भी हमारे सोल कॉन्शसनेस ही है, स्वमान की स्थिति है, हमारी आत्मिक दृष्टि है। तो हम धुन लगा दे, इन तीनों चीजों पर।

" मैं आत्मा भ्रकुटी सिंहासन पर विराजमान हूँ .. इन शरीर में चमकती हुई मणि हूँ "

और ....

" मैं एक महान आत्मा हूँ .. पवित्र आत्मा हूँ .. विजयी रतन हूँ .. माया पर मेरी विजय निश्चित है "

और अभ्यास करतें जायें तीव्र गति से कि ... किसी के भी देह को देखकर हमारे मन में बूरे विचार न चले। हमें आत्मा को सुन्दर बनाने के लिए सबको मदद करना है।

और सबको पवित्र वायब्रेशन्स देकर उन्हें उनकी **मूल स्थिति** तक ले जाना है। मुक्ति का वरदान देना है।

तो आज सारा दिन हर घन्टे में एकबार **पाँच स्वरूपों का अभ्यास** करेंगे इस गुड फीलिंग के साथ कि ....

" मैं आत्मा हूँ तो परम पवित्र .. देव स्वरुप में थी तो परम पवित्र .. मेरा पुज्य स्वरुप है तो परम पवित्र .. अब मैं ब्राह्मण हूँ तो परम पवित्र .. और परम पवित्र फरिश्ता बनना है "

इसकी प्रैक्टिस बार-बार करते चलें।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org